कुषाण

→ कुषाण वंश के संस्थापक कुजुल कडफिसेस था।
→ कुषाण वंश के संस्थापक के बाद सबसे प्रतापी राजा कनिष्क था। इसकी राजधानी पुरुषपुर या पेशावर था।
→ कनिष्क ने 78 ई० में एक संवत् चलाया, जो शक संवत कहलाता है।
→ बौद्ध धर्म की चौथी बौद्ध-संगीति कनिष्क के शासन काल में कुण्डलवन (कश्मीर) में प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुमित्र की अध्यक्षता में हुई।
→ कनिष्क बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का अनुयायी था
→ कुषाण शासकों ने भारी संख्या में स्वर्ण मुद्राएं जारी की, जिनकी शुद्धता गुप्त काल की स्वर्ण मुद्राओं से उत्कृष्ट है।
→ कनिष्क का राजवैद्य आयुर्वेद का विख्यात विद्वान चरक था, जिसने चरक संहिता की रचना की।
→ महाविभाष सूत्र के रचनाकार वसुमित्र हैं। इसे ही बौद्धधर्म का विश्वकोष कहा जाता है।
→ कनिष्क के राजकवि अश्वघोष ने बौद्धों का रामायण बुद्धचरित की रचना की।
→ भारत का आइन्सटीन नागार्जुन को कहा जाता है। इनकी पुस्तक माध्यमिक सूत्र है। इस पुस्तक में नागार्जुन ने सापेक्षता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया था।
→ कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।
→ गंधार शैली एवं मथुरा शैली का विकास कनिष्क के शासनकाल में हुआ था।
→ रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। कुषाण साम्राज्य में मार्गों पर सुरक्षा का प्रबंध था।

Scanned with CamScanner